Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, SEPT-OCT 2017, VOL- 4/36

मैथिली आलोचना – साहित्य में आचार्य रमानाथ झा का अवदान

नीलम कुमारी, Ph. D.
सहायक प्राध्यापक

Abstract

इस लेख के माध्यम से मैथिली आलोचना के क्षेत्र में अपनी गहन रुचि रखने वाले एवम् बहु भाषा विद् रमाकांत झा के बारे में बताया गया है | रमानाथ झा मैथिली शास्त्रीय आलोचना को दिशा-निर्देश देने वाले , साहित्य समृद्धि की दिशा में सतत् चिंतनशील रहने वाले एंव आधुनिक मैथिली भाषा साहित्य के महान विद्वान् थे |

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

इस जगत में कोई कार्य – व्यापार में सन्नध कलाकार अपना यथार्थ श्रम और शक्ति, प्रतिभा और अभ्यास आदि से अभिनव वस्तुओ का सृजन करता है | अनादिकाल से पावन भूमि मिथिला में एक से एक वाणी के वरद-पुत्रों का अविर्भाव समयानुसार होता रहा है | प्राय: विश्व का कोई शास्त्र नहीं, जिसका अध्यन- अध्यापन और रसस्वादन यहाँ के लोग करते आ रहे हैं| यहाँ नाना-शास्त्र में निष्ठात पंडित-गुणी, साहित्य-साधना में सन्नध साहित्य मनीषी एंव अनेकानेक शास्त्र-विद्या में प्रवृत्त लोगों के भिन्न-भिन्न अभिरुचि के दृष्टि-पथ को प्रतिभाषित करता आ रहा है|

कला के कई प्रकार होते है परन्तु काव्य-कला सभी कलाओं में सर्वोपरि स्थान रखता है | कला का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानवीय जीवन के साथ अन्य जीव-जगत के संग भी है | किसी काव्य कलाकार का गुण होता है कि इस प्रक्रति के मध्य वह जो अपनी आँखों के समक्ष देखता है , उसे यथावत अपनी रचना के कैमरा सद्रश चित्रित करता है और यह उसका सहज गुण माना जाता है | लेकिन आलोचक विविध-विद्या के आदि से अंत तक अध्यन पश्चात् नीर-क्षीर विवेक का शरण लेते हैं | आलोचक का प्रमुख गुण है निष्पक्ष होना | जो आलोचक निष्पक्ष आलोचना नहीं करते , गुण-अवगुण की सामान रूप से व्याख्या नहीं करते है, सिर्फ "स्तुति" अथवा निंदा की शरण लेते हैं , वो पाठकों के हृदय कभी नही जीत सकते |

प्रो० रमानाथ झा मैथिली आलोचना साहित्य के आधार स्तम्भ माने जाते हैं | उन्होनें जिस किसी भी विषय पर आलोचनात्मक दृष्टि से कलम चलाया , वह पूर्ण निर्भीकता के साथ चलाया | आचार्य रमानाथ झा एक स्वस्थ आलोचक थे | वह आलोचना के गुण-अवगुण से परिचित हे | आलोचना का स्वरूप क्या होता है , इसका प्रभाव क्या पड़ता है , आलोचना कैसे करनी चाहिए , आलोचना के लिए किन तत्वों की आवश्यकता होती है , स्वस्थ आलोचक का गुण क्या हो, आलोचना व्यक्ति की हो अथवा रचना की , आलोचना पक्षपाती है या निष्पक्ष , मैथिली आलोचना की दशा-दिशा को नव-आयाम किस प्रकार दिया जा सकता है , इन सभी विषयों पर अति उत्तम रीति

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

साथ आलोचना-विद्या को आगे बढाए | आचार्य रमानाथ झा ने आलोचना साहित्य में मील का पत्थर स्थापित किया |

प्रो० रमानाथकी आलोचकीय लेखनी कथा , कविता, निबंध संपादकीय टिप्पणी उपन्यास अथवा जीवनी आदि समस्त विद्या में परिलक्षित होती है | प्रो० झा ने किसी विद्या में स्वतंत्र लेखन विशेष नहीं किया | इनकी प्रखर काव्य प्रतिभा प्रतिभाषित-उदभाषित हुई है, मूलतः आलोचना विद्या में जो किअद्वितीयहै |

रमानाथ बाबू अंग्रेजी साहित्य केउदमट विद्वान थे | उन्होनें पाश्चात्य साहित्य का गहन अध्यन-मनन किया था | इसके अतिरिक्त मैथिली, संस्कृत , हिंदी, बांगला आदि भाषा पर पर भी उनका समान अधिकार था | कई भाषाओँ के ज्ञाता होने के कारण किसी रचना पर उनका निर्णय ही प्राय: सर्व मान्य तथा सर्व ग्राहय ही होता था | समीक्षक के सर्वगुणों से संपन्न थे आचार्य रमानाथ झा |

"समीक्षा" एक सूक्ष्म शब्द है जिसकी प्रष्ठभूमि में कुछ ऐसे गहन सिद्धांत है जिसमे इस शब्द का निरूपण किया गया है |

"समीक्षा अथवा समालोचना" शब्द के लिए अंग्रेजी साहित्य में 'क्रिटिसिज्म' शब्द का प्रयोग किया जाता है | यह शब्द क्राइटस शब्द से बना है, जिसका अर्थ है मूल्यांकन करना |

मूल्यांकन प्रक्रिया में गुण दोष की विवेचना मूल्य निर्धारण का सिद्धांत है |

युग परिस्थिति या मान्यता के अनुसार किसी देश अथवा क्षेत्र विशेष मे समालोचना के सन्दर्भ में विशेष भिन्नता आ सकती है परंतु यह गुण दोष की संतुलित विवेचना-समालोचना की आधारशिला होती है |

यह संतुलित समालोचना आधुनिक पाश्चात्य साहित्य में विस्तृत और शशक्त रूप में अदयावधि से जाग्रत है | आधुनिक समीक्षा सिद्धांत 19वीं शताब्दी के समीक्षा प्रणाली से पर्याप्त भिन्नता रखता है | लेकिन उस युग की मान्यता आज भी कुछ अंश में कार्य कर रही है | समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान आदि सब का प्रभाव समीक्षा में दृष्टिगोचर हो रहा है |

सत्य यह है कि जिस देश में जितनी शिक्षा संस्कृति का विकास होता है, उस देश में उसी प्रकार अनेकों रूप में समालोचना की विविध-पद्धति अपनाई गयी है |

हिंदी और मैथिली साहित्य की समीक्षा प्रणाली में पाश्चात्य समीक्षा प्रणाली का विशिष्ट प्रभाव देखा जाता है |

समालोचना की व्यापक संभावना 18वीं शताब्दी से मिलती है परंतु 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड में हैजलिट, वर्ड्सवर्थ शैली एंव विक्टोरिया कालीन प्रतिष्ठित समालोचक आर्नल्दक साहित्य की समीक्षा में जो मापदंड से सामंजस्य नहीं रख सका क्योंकि उस युग की परिस्थिति एंव आधुनिक युग की परिस्थिति में असमानता है |

19वीं शातादी रोमांटिसिज्म का युग था | काव्य सद्रश समालोचना में अपनी जीवन कथा ,ऐतिहासिक क्रम में व्यवस्थित प्रष्ठ-भूमि रख मूल्य निर्धारण करना सभी आलोचको की एक विशेषअंतर्मुखी प्रवृत्तिथी जिससे वे बहिर्मुखी ज्ञान तथा सत्य का साक्षात्कार नहीं कर सके |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समीक्षा प्रणाली के विभिन्न अंग पाश्चात्य संस्कृति की उन्नति में सहायक हुए है | इससे दूसरे भाषाओ के साहित्य भी प्रभावित हुए है | समय परिवर्तन के अनुरूप समीक्षा प्रणाली की व्यापकता के लिए तुलनात्मक आलोचना प्रारंभ हुई | यह प्रणाली ज्ञानवर्धक एंव लोगों के लिए उपयोगी है | तुलनात्मक समीक्षा को "ड्राईडन" ने अधिक महत्व दिया | प्रो० सेंट बारिक का भी ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ |

मनोवैज्ञानिक आलोचना एंव दार्शनिक सत्य के समन्वयक 19वीं शताब्दी के मूर्धन्य समालोचक कोलरिज थे | उनके मनोवैज्ञानिक सिधांत का प्रभाव संप्रति आइ. ए. रिचर्ड पर भी दिखता है |

मनोविश्लेषक प्रवर्तक आधुनिक युग में 'फ्रायड तथा युंग' थे | इनका सिद्धांत समीक्षा जगत में क्रांति मचा चुका है | किन्तु इससिद्धान्तिक समीक्षा के विश्व-विख्यात प्रवर्तक प्लैटो तथा अरस्तू का समीक्षा संबंधी सिद्धांत विरोध एंव अवरोध प्रस्तुत कर रहा है | वर्तमान युग के शंखनाद को श्रवण कर आलोचकों ने प्रगतिवादी आलोचना प्रारंभ किये जिसका जन्म रूस में मैक्सिम गोर्की द्वारा हुआ जिसके प्रवर्तक थे "क्लाउडवैल" |

मैथिली में आलोचना विद्या संतोषजनकही कहा जा सकता है | पाश्चात्य आलोचना साहित्य का व्यापक प्रभाव मैथिली आलोचना पर भी पड़ा है जो इसकी आलोचना के स्वरूप , दृष्टिकोण , एवम् तर्क से प्रतीत होता है | मिथिला सर्वदा संस्कृत विद्या की भूमि रही है इसलिए संस्कृत परंपरा की समालोचना शास्त्र का प्रभाव मैथिली में सर्वाधिक प्रबल रहा है | मैथिली के प्राय: सभी प्रमुख समालोचको पर "साहित्य दर्पण" एंव "कार्य प्रकाश" आदि संस्कृत काव्य शास्त्र का प्रभाव पड़ा है | इन ग्रंथों का अनुवाद मैथिली में हुआ है |

आज पाश्चात्य समालोचना शास्त्र के पक्षपाती विशेष संख्या में है और अधिक मुखर भी | इन लोगों का समालोचना में पारंपरिक अथवा मार्क्सवादी विचार का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है | इससे उत्कृष्ट वे समालोचक है जो प्राच्य एंव पाश्चात्य दोनों मत को समाहित करने में संलग्न थे |

प्रो० रमानाथ झा ने आलोचना-समालोचना को और उसमे भी पाश्चात्य और पौर्वात्य दोनों के मर्म को अच्छे से समझा , मनन-चिंतन किया और उसके बाद किसी भी रचना विशेष पर अपना विचार प्रस्तुत किया जो कि निष्पक्ष एंव परिपूर्ण रहा | वे कहीं भी पूर्वाग्रह-पक्षपात आदि से ग्रसित नहीं थे | यह उनकी आलोचना में दिखता था|

रमानाथ बाबू में यह बहुत बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने बड़े-बड़े विद्वानों से यथायोग्य विद्या पर कार्य करवाया एंव बाद में उन विद्वानों की रचना पर उन गुण-अवगुण पर निर्भीकता से उन्होंने अपना मत प्रकट किया | यह सर्वग्राह्य एंव मैथिली में मील का पत्थर प्रमाणित हुआ | आज आचार्य रमानाथ झा की आलोचना पर प्रश्न उठाने से पहले बहुत सोचना पड़ेगा | सर्वप्रथम विद्वानों को स्वयं विशाल ग्रंथ-सागर मे डूबना होगा, तत्पश्चात ही वे साहस कर सकते है अन्यथा उनके विशाल दृष्टि , व्यापक दृष्टिकोण और निष्पक्ष भाव के आगे कोई कुछ नहीं कर सकता | इन्हीं विशेषताओ के कारण आचार्य रमानाथ बाबू को अपने आप में एक "संस्था" कहा जाता है | मैथिली आलोचना के लिए यदि इन्हें "एन्साइक्लोपीडिया" कहा जाये तो वह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रो० रमानाथ झा जी ने जो भी लिखा , वह काफी ठोस लिखा , सारगर्भितरूप से विषयवस्तु का प्रतिपादन किया | संपादन , भूमिका लेखन , सम्मति लेखन , पुस्तकों का लेखकीय एंव मौलिक निबंधों में इनके प्रखर वैदुष्य का दिगर्शन होता है | यह वस्तुतः प्रेरणादायक एंव अनुकर्णीय है |

रमानाथ बाबू के व्यक्तित्व-कृतित्व का मूल्यांकन विभिन्न विद्वानों द्वारा "रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रंथ " में हुआ है | रमानाथ बाबू ने अपनी जीवनावधि में आलोचना के क्षेत्र में गुस्तर कार्य कर के मैथिली साहित्य जगत को सम्रद्ध किया है |

इनके द्वारा संकलित दो निबंधों की किताब उपलब्ध है – "निबंधमाला" एंव "प्रबंध संग्रह" | अनुवाद ग्रंथ के रूप में विद्यापति द्वारा प्रणीत "पुरुष-परीक्षा" का अनुवाद मिलता है | पौराणिक कथा पर आधारित पोथी "उदयन कथा" और "वररुचि कथा" का इन्होनें सृजन किया तथा संकलित-संपादित रूप में "मैथिली गद्य संग्रह (तीन भाग)", "मैथिली पद्य संग्रह, "कविता कुसुम" , "प्राचीन गीत", "कथाकाव्य" और "नवीन गीत" आदि का नाम उल्लेखनीय है |

व्याकरण तथा रचना की पुस्तक रूप "मिथिला-भाषा प्रकाश" का नाम लिया जा सकता है | इसके अतिरिक्त "अलयी कुल-प्रकाश", "मैथिलीक वर्तमान समस्या", "मैथिली गद्यक प्रसंग" आदि ग्रंथ के रचनाकार रह चुके हैं और इसके साथ ही मंबोधक "कृष्णजन्म" एंव चंदा झा जी के द्वारा प्रणीत "मिथिला भाषा रामायण" आदि पोथी का संपादन किया है |

हिंदी एंव अंग्रेजी भाषा में भी इनकी पुस्तक मिलती है जैसे "मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था", टेल्स फ्रॉम विद्यापति , विद्यापति (साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रकाशित) आदि |

प्रो० झा के सुपुत्र स्व० डा० नरनाथ झा द्वारा संपादित "विविध प्रबंध" नामक पुस्तक में रमानाथ बाबू द्वारा लिखित सत्रह प्रबंध मिलते है , जिसमे विषय वैविध्य दृष्टिगत होता है |

आचर्य प्रवर ने "साहित्य पत्र" नामक प्रख्यातत्रैमासिकमैथिली पत्रिका का कुशल संचालन किया है इसी पत्रिका में कविशेखर बदरीनाथ झा का "एकावली परिणय" महाकाव्य, प्रो० तंत्रनाथ का "कीचक वध" महाकाव्य, कुमार गंगानंद सिंह का "अगिलही" उपन्यास का एक अंश, डा० अमरनाथ झा द्वारा संपादित गोविंद दास जी की "श्रृंगार भजनावली" उनकी अपनी "उदयन कथा" आदि सुप्रसिद्ध पुस्तकें प्रथमतः प्रकाशित हुई , जिसका श्रेय पत्रिका को नहीं बल्कि स्वयं रमानाथ झा जी को ही जाता है |

रमानाथ बाबू ने कई शोध गवेशकों का मार्गदर्शन कर डा० की उपाधि दिलाई , उन्हें विद्वान् बनाया | वह हरिसिंह देव पंजी व्यवस्था के विशेषज्ञ थे | ऐसे ही महाकवि विद्यापति पर उनका जैसे एकाधिकार था और इसका सर्वोपरि कारण था इनकी गंभीर अध्यनशीलता तथा चिंतन-शैली की पटुता निसंदेह आचार्य रमानाथ झा जी का जीवन-दर्शन आदर्श से भरपूर है | इनकी गंभीरता सागरसद्रश थी जो प्रेरणास्पद रही | इनका वाक चातुर्य किसी भी सभा मंच पर देखने योग्य होता था | बड़े से बड़े विद्वानो को वह अपने तर्क से पराजित कर दिया करते थे | इनकी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आलोचना की अपनी एक ख़ास शैली थी जिससे सभी सुपरिचित थे तथा उसे "स्तुति" एंव "निंदा" के रूप में ग्रहण नहीं करते थे|

रमानाथ बाबू जैसे महापुरुष का अविर्भावइस धरा पर सतत नहीं बल्कि विरल होने का सन्देश देता है , अमृत जैसा अनुपम उपदेश प्रदान करते हुए वह पंचतत्व में विलीन हुए, परन्तु अमरता लिए हुए|

सन्दर्भ सूची (Reference) :

मैथिली साहित्यिक इतिहास - डा० दुर्गानाथ झा 'क्रीश' , दरभंगा , 2002

रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रंथ – संकलित

परिचय प्रसून - डा० धीरेंद्र नाथ मिश्र

नवीन निबंध संकलन - डा० अमरेश पाठक (साहित्य अकादमी , दिल्ली)

प्राचीन गीत भूमिका – संपादक – रमानाथ झा

मैथिली साहित्यक इतिहास – जयकांत मिश्र

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies